शिक्षा विभाग, पंजाब

पाठ - 18,शिवाजी का सच्चा स्वरूप **रचनाकार – सेठ गोविन्ददास**

कक्षा – नौवीं **विषय – हिन्दी**

शब्दार्थ

1) दालान = बरामदा 2) स्तम्भ = खम्भा 3) जाजम = फर्श आदि पर बिछाई जाने वाली छपी हुई चादर,कालीन 4) कमख्वाब = रंगीन–बूटीधार रेशमी कपड़ा 5) मावली = शिवाजी के खास सैनिक 6) निस्तब्धता = चुप्पी 7) हम्माल = मज़दूर,कुली 8) मेणा = बंद पालकी 9) वृत्त = इतिहास,वृत्तांत 10) भृकुटि = भौंह 11) तोहफा = भेंट,उपहार 12) सिपहसालार = सेनापति 13) नामाकूल हरकत = अनुचित व्यवहार 14) इबादत = पूजा 15) अभिवादन - सत्कार 16) सदृश - समान 17) हिफाज़त = सुरक्षा 18) ख़बरदारी = सावधानीपूर्ण	19) दुर्ग = क़िला 20) पेशवा = सरदार,नेता 21) मसनद = गोल लंबोतरा तथा बड़ा तकिया 22) वीरासन = बैठने का एक ढंग जो प्रायः प्राचीन योद्धाओं,योगियों,तांत्रिकों आदि द्वारा अपनाया जाता है। 23) शौहर = पति 24) कदाचित् = शायद,कभी 25) घृणित = घृणा के योग्य 26) आततायी = सताने वाले 27) क्षति = नुकसान 28) रक्तपात = खून बहाना 29) उदारचेता = खुले विचारों वाला 30) शील = चरित्र 31) श्रेयस्कर = कल्याणकारी 32) इन्द्रियलोलुप = भोग–लोलुप 33) प्रायश्चित = पछतावा 34) कनखी = तिरछी नज़र 35) अजीबो गरीब = विचित्र 36) सत्ता का अपहरण = राज्य छीनना

(क) - विषय–बोध

1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो पंक्तियों में दीजिए:-

1) शिवाजी कौन थे?

उत्तर - शिवाजी एक प्रसिद्ध मराठा वीर थे। उनका पूरा नाम शिवाजी राजे भोंसले था।

2) मोरोपंत कौन था?

उत्तर - मोरोपंत शिवाजी के राज्य में एक पेशवा था।

3) आवाजी सोनदेव कौन था?

उत्तर - आवाजी सोनदेव शिवाजी का एक सेनापति था।

4) शिवाजी के सच्चे स्वरूप को दर्शाती इस पाठ की घटना किस समय की है?

उत्तर - यह घटना सन् 1648 ईस्वी की संध्या की है,जब शिवाजी धर्मांध विदेशी शासन के अमानुषिक अत्याचारों से निरन्तर लोहा ले रहे थे।

5) मोरोपंत शिवाजी को आकर कौन सा शुभ समाचार देता है?

उत्तर - मोरोपंत शिवाजी को आकर यह शुभ समाचार देता है कि उनके सेनापति आवाजी सोनदेव ने कल्याण प्रांत को जीत लिया है और वहाँ का सारा खज़ाना लूट कर लौट आया है।

6) आवाजी सोमदेव ने शिवाजी को सबसे बड़े तोहफ़े के बारे में क्या बताया?

उत्तर- आवाजी सोनदेव बन्द पालकी में बैठी कल्याण के सूबेदार अहमद की सुन्दर पुत्र-वधू को शिवाजी की सेवा के लिए ही विजय का सबसे बड़ा तोहफ़ा बनाकर लेकर आया है।

7) शिवाजी की प्रसन्नता एकाएक लुप्त क्यों हो गई थी?

उत्तर - आवाजी सोनदेव सूबेदार अहमद की सुन्दर पुत्र–वधू को उनको भेंट करने के लिए लाया है,यह सुनकर शिवाजी की सारी प्रसन्नता एकाएक लुप्त हो जाती है।

8) शिवाजी ने सूबेदार की पुत्र-बधू की सुरक्षा करते हुए उसे क्या आश्वासन दिया?

उत्तर - शिवाजी ने सूबेदार की पुत्र-बधू को सुरक्षा प्रदान करते हुए उसे यह आश्वासन दिया कि उसको इज्ज़त,हिफाज़त और ख़बरदारी के साथ उसके शौहर के पास पहुँचा दिया जाएगा।

9) शिवाजी पर-स्त्री को किसके समान मानते थे?

उत्तर - शिवाजी पर–स्त्री को माँ के समान मानते थे।

10) शिवाजी ने अन्त में क्या घोषणा की?

उत्तर - शिवाजी ने अन्त में घोषणा की कि भविष्य में अगर कोई ऐसा कार्य करेगा तो उसका सिर उसी समय धड़ से अलग कर दिया जाएगा।

2) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन या चार पंक्तियों में दीजिए:-

1) शिवाजी ने अपने सेनापति की ग़लती पर सूबेदार की पुत्र-बधू से किस प्रकार माफी माँगी?

उत्तर - सूबेदार की पुत्र-वधू से माँ का सम्बोधन करते हुए शिवाजी ने अपने सेनापति के अनुचित तथा मूर्खतापूर्ण व्यवहार पर माफी माँगते हुए उसकी अजीबो–गरीब खूबसूरती की प्रशंसा की और कामना की कि काश उसकी माँ भी उसकी तरह खूबसूरत होती। उन्होंने कहा,“माँ,आपकी खूबसूरती की मैं केवल हिन्दू विधि से पूजन ही कर सकता हूँ। आप ज़रा भी परेशान न हों। आपको पूरी इज्ज़त और हिफाज़त के साथ आपके शौहर के पास पहुँचा दिया जाएगा।”

2) शिवाजी ने अपने सेनापति को किस प्रकार डाँट फटकार लगायी?

उत्तर - शिवाजी ने अपने सेनापति को डाँट फटकार करते हुए कहा,"आवाजी,तुमने ऐसा काम किया है जो कदाचित् क्षमा नहीं किया जा सकता। शिवा को निकट से जानते हुए भी तुम्हारा साहस ऐसा घृणित कार्य करने के लिए कैसे हुआ? शिवाजी ने तो सदा मस्जिद और कुरान को भी पूज्य माना है। वह हिन्दू और मुसलमान प्रजा में कोई अन्तर नहीं समझता। आवाजी,क्या तुम मेरी परीक्षा लेना चाहते थे? इसलिए तो तुमने यह कार्य नहीं किया? शिवा में,उसके सेनापतियों तथा सरदारों में शील नहीं तो फिर हम में और लोलुप लुटेरों तथा डाकुओं में कोई अन्तर ही नहीं रह जाता। इस पाप का न जाने मुझे कैसा-कैसा प्रायश्चित करना पड़ेगा?"

3) शिवाजी किस तरह के सच्चे स्वराज्य की स्थापना करना चाहते थे?

उत्तर - हिन्दू होते हुए भी शिवाजी को इस्लाम धर्म-पूज्य था। इस्लाम के पवित्र स्थान, उसके पवित्र ग्रंथ उनके लिए सम्मान की वस्तुएँ थीं। उसकी सेवा में मुस्लिम सैनिक तक थे। अतः वे देश में हिन्दू राज्य नहीं सच्चे स्वराज्य की स्थापना करना चाहते थे और आततायियों से सत्ता का अपहरण कर उदारचेता चेताओं के हाथों में अधिकार देना चाहते थे।

4) शिवाजी शील अर्थात् सच्चरित्र को जीवन का आवश्यक अंग क्यों मानते थे?

उत्तर - शिवाजी शील और सच्चरित्र की जीती जागती तस्वीर हैं। वे तो अपने शत्रु की मुस्लिम स्त्री को भी माँ कह कर सम्बोधित करते हैं। उनका यह मानना है कि पर-स्त्री तो हर एक के लिए माता के समान होती है। अतः जो अधिकार प्राप्त जन हैं,जो सरदार हैं या राजा ही क्यों न हो,उन्हें तो अपने सच्चरित्र का पालन करते हुए सबसे अधिक विवेक रखना आवश्यक होता है।

3)निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर छह या सात पंक्तियों में दीजिए:-

1)'शिवाजी का सच्चा स्वरूप' पाठ के आधार पर शिवाजी का चरित्र-चित्रण कीजिए।

उत्तर-शिवाजी अपने विशेष सैनिकों का सम्मान करना जानते हैं,तभी तो वे कल्याण प्रांत को जीत कर लौटते हुए अपने सेनापति आवाजी सोनदेव से पैदल तथा घुड़सवारों के अभिपतियों का कुशल क्षेम पूछते हैं। वे उद्दण्डता तथा घृणित कार्य करने वाले व्यक्ति को दण्ड देने की क्षमता भी रखते हैं। शिवाजी हिन्दू और मुसलमान प्रजा में कोई भेदभाव नहीं करते हैं। शिवाजी इस्लाम के पवित्र स्थानों तथा पवित्र ग्रंथों का सम्मान करना भी जानते हैं। वे अपने देश में तभी तो हिन्दू राज्य नहीं सच्चे स्वराज्य की स्थापना करना चाहते हैं। पर-स्त्री को तो वे माता के समान मानते हैं। शिवाजी शील स्वभाव में विश्वास रखने वाले शासक हैं। तभी तो वे इन्द्रियलोलुप लुटेरों में तथा अपने अधीनस्थ घृणित कार्य करने वाले व्यक्तियों में कोई अन्तर नहीं मानते। वे किसी भी पाप का प्रायश्चित करने में नहीं हिचकिचाते। इस प्रकार शिवाजी एक सच्चरित्र व्यक्ति का बेजोड़ उदाहरण हैं।

2) इस पाठ से आपको क्या शिक्षा मिलती है?

उत्तर- 'शिवाजी का सच्चा स्वरूप' एकांकी से यह शिक्षा मिलती है कि सच्चे स्वराज्य से ही प्रजा का कल्याण हो सकता है। किसी भी व्यक्ति को भले ही वह बड़े से बड़े पद का अधिकारी हो,उसे कोई भी नीच या घृणित कार्य नहीं करना चाहिए। पर-स्त्री को माँ के समान मान कर उसका आदर सम्मान करना चाहिए। किसी भी व्यक्ति को कोई भी घृणित कार्य नहीं करने दिया जाना चाहिए अन्यथा वह दण्ड का अधिकारी हो सकता है। मनुष्य को सभी धर्मों का सम्मान करना चाहिए। किसी के भी धार्मिक स्थान अथवा धार्मिक पुस्तकों को किसी प्रकार की

भी क्षति नहीं पहुँचानी चाहिए। मनुष्य को अपने अधिकार क्षेत्र की कभी भी उलंघना नहीं करनी चाहिए।

3) 'शिवाजी का सच्चा स्वरूप' एकांकी के नाम की सार्थकता अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर- 'शिवाजी का सच्चा स्वरूप' एकांकी का नाम सर्वथा सार्थक ही प्रतीत होता है क्योंकि इसमें एकांकीकार ने आरम्भ से लेकर अन्त तक शिवाजी के सच्चरित्र और उनके सच्चे स्वरूप को ही प्रदर्शित करने की चेष्टा की है। रचनाकार ने इस एकांकी में शिवाजी को हमारे राष्ट्रीय गौरव के महान ध्वज के रूप में चित्रित करने में सर्वथा सफलता पाई है। शिवाजी की अपराजेय शक्ति,शौर्य तथा पराक्रम के साक्षात स्वरूप की अभिव्यक्ति करने वाली इस एकांकी का नाम सर्वथा सार्थक है। देश की शक्तियों को संगठित कर 'हिन्दवी स्वराज्य' की स्थापना का स्वप्न दिखाना भी इस एकांकी के नाम की सार्थकता ही सिद्ध करता है।

4) निम्नलिखित पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए :-

1) आवाजी क्या तुम मेरी परीक्षा लेना चाहते थे? इसलिए तो तुमने यह कार्य नहीं किया?

उत्तर - ये पंक्तियाँ शिवाजी ने अपने सेनापति आवाजी सोनदेव को उस समय कही थीं,जब वह कल्याण के सूबेदार अहमद की सुन्दर पुत्र-बधू को एक बंद पालकी में लाकर उसे शिवाजी को भेंट करना चाहता है। शिवाजी उसकी इस हरकत से दुःखी होकर खिन्नता से भरे स्वर में उसे धिक्कारते हैं कि उसने यह कैसा अनर्थ कर डाला है। शिवाजी उसे कहते हैं कि उसने ऐसा काम किया है,जो कदाचित् क्षमा नहीं किया जा सकता। वह तो उनके सच्चरित्र को भली भांति जानता है और निकट से जानता है। उनके सान्निध्य में रहते हुए भी उसने क्या वह धृष्टता उनके चरित्र की परीक्षा लेने के लिए तो नहीं की? सम्भवतः उसने यही सोचकर ऐसा

किया होगा। उन्हें उसके इस कुकृत्य पर विश्वास ही नहीं हो रहा कि उसने किस अभिप्राय से यह सब किया है।

2) पेशवा वह ..... वह मेरे ..... मेरे एक सेनापति ने ..... मेरे एक सेनापति ने क्या ..... क्या कर डाला। लज्जा से मेरा सिर आज पृथ्वी में नहीं पाताल में घुसा जाता है। इस पाप का न जाने मुझे कैसा ..... कैसा प्रायश्चित करना पड़ेगा?

उत्तर - ये पंक्तियाँ अपने मोरोपंत नामक पेशवा से शिवाजी दुःखी और खिन्न मन से उस समय कहते हैं,जब उनका सेनापति आवाजी सोनदेव कल्याण विजय के उपरान्त वहाँ के सूबेदार अहमद की सुन्दर पुत्र-बधू को शिवाजी को भेंट करने अपने साथ ले आता है। शिवाजी को उसके इस घृणित कार्य के फलस्वरूप अपने क्षोभ को अभिव्यक्त करने में भी बड़ी मुश्किल होती है। इन्हें इस बात पर यकीन ही नहीं हो पाता कि ऐसा कुकृत्य उनके सेनापति ने किया है। उसके इस जघन्य कार्य से शिवाजी को इतनी शर्मिन्दगी तथा लज्जा आती है कि उनका सिर सर्वथा झुक जाता है। वे करें भी तो क्या करें। उन्हें प्रायश्चित करने के बारे में भी कुछ नहीं सूझता। वस्तुतः शिवाजी के विचार में यह एक ऐसा पाप हो गया था जिस का कोई प्रायश्चित हो ही नहीं सकता।

(ख) भाषा - बोध

1) निम्नलिखित शब्दों को शुद्ध करके लिखिए:-

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
1) दलान	दालान	8) सेनापती	सेनापति
2) सुससजित	सुसज्जित	9) उपसथित	उपस्थित
3) वेषभूशा	वेशभूषा	10) मुसकुराना	मुस्कुराना
4) गबराहट	घबराहट	11) खुबसूरती	खूबसूरती
5) हिंदु	हिन्दू	12) सवराज्य	स्वराज्य
6) मसजिद	मस्जिद	13) घृणीत	घृणित
7) श्रेसकर	श्रेयस्कर	14) प्राशचित	प्रायश्चित

2) निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ समझकर उन्हें वाक्यों में प्रयुक्त कीजिए:-

1) भृकुटि चढ़ना (क्रोध में आना) - आवाजी के कुकृत्य को देखकर शिवाजी की भृकुटि चढ़ गई।

2) (नीचे का) होंठ (ऊपर के) दाँतों के नीचे आना (क्रोध करना) - जब रमेश ने मेरा बार-बार अपमान किया,तो मेरा (नीचे का) होंठ (ऊपर के) दाँतों के नीचे आना स्वाभाविक ही था।

3) सिर पर चढ़ाना (सम्मान करना) - वह तुम्हारा होनहार भाई है इसलिए तुमने उसे सिर पर चढ़ा रखा है।

4) बाल बराबर दरार न आने देना (ज़रा भी नुकसान न होने देना) - शत्रुओं का हमारे सैनिकों ने इस प्रकार डट कर मुकाबला किया कि उन्होंने हमें बाल बराबर दरार न आने दी।

शिक्षा विभाग,पंजाब

मार्गदर्शक - डॉ: सुनील बहल

सहायक निर्देशक (एस. सी. ई. आर. टी. पंजाब)

सौजन्य :

गुरप्रीत कौर

हिन्दी शिक्षिका

स. स. स. स्कूल

अठवाल

अमृतसर

संशोधन :

पंकज माहर

हिन्दी शिक्षिका

स. मा. स. स. स्कूल

लाडोवाली रोड

जालन्धर

संयोजक :

राजन

हिन्दी शिक्षक

स. मि. स्कूल

लोहारका कलाँ

अमृतसर